SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोको द्वीप की स्त्रातेजिक स्थिति का भारत एवं म्यांमार की सामुद्रिक क्षेत्रीयता पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

गिरीश कांत पाण्डेय, डी. लिट्., प्राचार्य
शासकीय कोदूराम दलित महाविद्यालय, नवागढ़, जिला–बेमेतरा, छत्तीसढ़, भारत
प्रवीण कुमार कड़वे, पी–एचडी, **वर्षा विश्वकर्मा,** शोधार्थी, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
गिरीश कांत पाण्डेय, डी. लिट्.
प्रवीण कुमार कड़वे, पी–एचडी
वर्षा विश्वकर्मा
E-mail : gkpcg@rediffmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/10/2025
Revised on : 10/12/2025
Accepted on : 19/12/2025
Overall Similarity : 00% on 11/12/2025

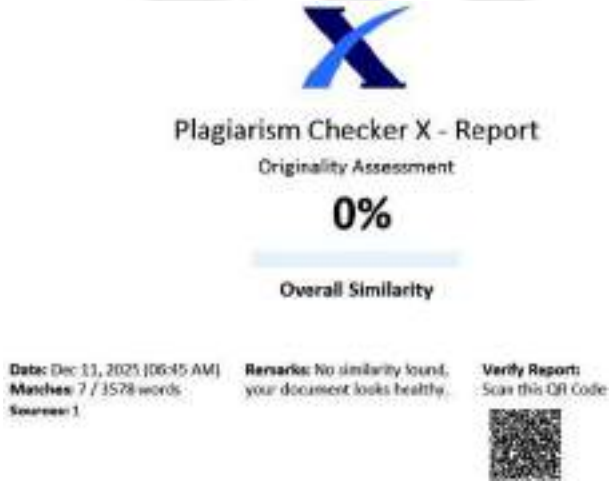

शोध सार

एशिया महाद्वीप का इतिहास सदैव शक्ति प्रदर्शन और स्थापना के लिए संघर्ष का केंद्र रहा है क्योंकि आज तक जितने भी विश्व में युद्ध एवं संघर्ष होते आए हैं, उनका संबंध कही ना कही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से एशिया महाद्वीप के देशों से रहा है। ऐसे में आज भी यहां स्थित दो एशियाई राष्ट्र, भारत व चीन के मध्य अघोषित संघर्ष की स्थिति विश्व व्याप्त है। जहां एक ओर भारत ऐसा देश है जो उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और दूसरी ओर विकसित देश चीन जो अपनी असीमित महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अडिग है। भारत जहां अपनी भू –स्त्रातेजिक के ऐसे स्थिति पर है जिसमें उनके कुछ पड़ोसी राष्ट्र सैन्य तख्ता पलट, बदहाल अर्थव्यवस्था व नागरिक असंतोष से उत्पन्न संवेदनशील परिस्थिति से घिरा हुआ है जो उसके लिए स्वतः चुनौतीपूर्ण है। ऐसे में चीन द्वारा दी जा रही भारत को आर्थिक एवं सामरिक चुनौतियां न केवल भू सीमाओं तक सीमित है अपितु यह हिन्द महासागर के सामुद्रिक लहरों तक विस्तारित है। यह स्थिति ब्रिटिश सैन्य इतिहासकार बी एच लिटिल हार्ट द्वारा प्रस्तावित कथन ''युद्ध का अप्रत्यक्ष उपागम– सीधे सैन्य बल के टकराव से बचने और दुश्मन की रक्षा की बजाय उसके संतुलन को बिगड़ने पर जोर देता है।'' के तहत भारत के संतुलन को बिगाड़ने की चुनौतियों को दर्शा रहा है जिसमें चीन द्वारा भारत के पड़ोसी देशों में बढ़ती रूचि एवं निवेश एक भारत विरोधी धारणा को प्रेरित करने वाला प्रयास है जिससे एशिया महाद्वीप के देशों में भारत के साथ असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होगी, साथ ही चीन का हिन्दमहासागर के समुद्री सीमाओं तक हस्तक्षेप करने का प्रयास भी जारी है जिसमें कोको द्वीप

की स्थिति भारत के लिये स्त्रातेजिक रूप से संवेदनशील है। द्वीप अपनी महान भू – स्त्रातेजिक अवस्थिति के कारण न केवल स्वराष्ट्र अपितु अंतरराष्ट्रीय समुदायों के भी रक्षा और सुरक्षा को प्रभावित करने वाले कारक होते हैं जो राष्ट्रों की द्विपक्षीय संबंधों, राष्ट्र नीतियों और विदेश नीति को निर्धारण में महत्वपूर्ण होते हैं। अतः इन दीपों का महत्व किसी भी राष्ट्र के लिए मुख्य भूमि के समान ही महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द

भारत, चीन, कोको द्वीप, हिन्दमहासागर, संघर्ष, अर्थव्यवस्था.

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के निकट या सुदूर स्थित द्वीप भूमि, समुद्र और हवाई क्षेत्र पर, उस राष्ट्र के विस्तारित क्षेत्रीय दावों को सशक्त आधार प्रदान करते हैं जो भौगोलिक आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और सामरिक महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह विशेषताएं न केवल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र और महाद्वीप शेल्फ में व्याप्त सामुद्रिक संसाधनों के उपभोग और विकास पर संप्रभु अधिकार है तथा वहां निवासरत मुख्य भूमि से संबंधित जनसंख्या की संस्कृति व जीवन यापन आधारों का पोषण करती है अपितु ये द्वीप अपनी महान भू – स्त्रातेजिक अवस्थिति के कारण न केवल स्वराष्ट्र अपितु अंतरराष्ट्रीय समुदायों के भी रक्षा और सुरक्षा को प्रभावित करने वाले कारक होते हैं जो राष्ट्रों की द्विपक्षीय संबंधों, राष्ट्र नीतियों और विदेश नीति को निर्धारण में महत्वपूर्ण होते हैं। अतः इन द्वीपों का महत्व किसी भी राष्ट्र के लिए मुख्य भूमि के समान ही महत्वपूर्ण है।

वर्तमान परिपेक्ष में सामुद्रिक क्षेत्र में उभरती नई भू राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में द्वीपीय क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। ऐसे में एशिया के हिन्द–प्रशांत समुद्री क्षेत्र में बढ़ते सैन्य घटनाक्रमों ने इस क्षेत्र में स्थित सभी द्वीप समूह विशेषतः म्यांमार का कोको द्वीप का रणनीतिक क्षेत्रीय विषेषता भारत और म्यांमार दोनों देशों से जुड़ा हुआ है। इस द्वीप पर बढ़ते चीन के प्रभाव ने यहां भारतीय सुरक्षा के अनिश्चित स्तर को बढ़ाया है जिससे इस क्षेत्र की स्थिति अस्थिर होती जा रही है, अतः कोको द्वीप का भारतीय सुरक्षा के साथ–साथ, भारत के संबंधों पर प्रभाव महत्व व चुनौतियौं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना अनिवार्य बनता है।

कोको द्वीप की भौगोलिक स्थिति

कोको द्वीप एक द्वीपों का समूह है जिसकी भौगोलिक अविस्थिति उत्तर पूर्वी बंगाल की खाड़ी में है। यह म्यांमार के क्षेत्रीय अधिकार के तहत यांगून क्षेत्र का हिस्सा है। यह द्वीप यांगून शहर से 414 किलोमीटर दक्षिण तथा प्रिपेरिस द्वीप कोको द्वीप समूह से उत्तर पूर्व में 77 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कोको द्वीप में तीन मुख्य द्वीप है। पहला ग्रेट कोको द्वीप और दुसरा छोटा लिटिल कोको द्विप, इन दोनो द्वीपों को अलेक्जेंड्रा चौनल अलग करती है एवं ग्रेड कोको द्वीप के निकट स्थित छोटा तीसरा टेबल द्वीप है। कोको द्वीप समूह भौगोलिक दृष्टिकोण से अंडमान एवं निकोबार भारतीय द्वीप समूह का हिस्सा है। यह कोको द्वीप 20 किलोमीटर चौड़े कोको चौनल द्वारा भारतीय द्वीप समूह के सबसे उत्तरी द्वीप लैंडफॉल द्वीप से अलग होता है।

कोको द्वीप का इतिहास

कोको द्वीप पर सर्वप्रथम पुर्तगाली नाविक पहुंचे। उन्होंने इस द्वीप का नाम कोको द्वीप रखा क्योंकि यह सर्वाधिक नारियल के पेड़ पाए जाते थे। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस द्वीप व अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर 18वीं शताब्दी में नियंत्रण स्थापित किया, बाद में इसका नियंत्रण अधिकार ईआईसी से भारत की ब्रिटिश सरकार को 19वीं शताब्दी में स्थानांतरित कर दिया गया था। अंग्रेजों ने अंडमान में एक दंड कॉलोनी की स्थापना की थी। यह सुदूर होने के कारण अंग्रेजों के लिए इस पर शासन करना कठिन था अंततः अंग्रेजों ने 1882 में कोको द्वीप का नियंत्रण बर्मा की ब्रिटिश सरकार को स्थानांतरित कर दिया। 1937 में भारत से बर्मा के अलगाव के पश्चात् यह भी बर्मी क्षेत्र के हिस्सा बन गए, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान ने अंडमान द्वीप समूहों के साथ–साथ कोको द्वीप पर भी नियंत्रण कर लिया था किंतु बाद में इन द्वीपों जापान के नियंत्रण से हटाने के बाद 1948 में इन द्वीपों का नियंत्रण स्वतंत्र बर्मा ने किया।

1662 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद सेना द्वारा इन द्वीपों पर दंड कॉलोनी स्थापित की गई। बाद में यहां में म्यांमार सेना का नौसैनिक अड्डा विकसित किया गया। 2003 में बीबीसी के साथ साक्षात्कार में भारतीय रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस ने कहा था कि हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कोको द्वीप समूह को 1950 में बर्मा को उपहार स्वरूप भेट कर दिया था, जिससे एक रणनीतिक संपत्ति का आत्म समर्पण कर दिया गया था।

स्रातेजिक स्थिति

विगत दशकों में कोको द्वीप समूह पर विकास को गति देने हेतु और इसके भू– स्त्रातेजिक महत्ता की क्षमता को अधिकतम करने के लिए म्यांमार सेना द्वारा विशेषतः वर्तमान म्यांमार के सैन्य प्रमुखों द्वारा स्पष्ट रूप से अधिक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन सभी घटनाक्रम की पृष्ठभूमि में से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस द्वीप समूह के राजनीतिक विशेषता का प्रभाव न केवल वर्तमान अपितु भविष्य के घटनाक्रमों पर होगा। यह द्वीप बंगाल की खाड़ी तथा मलक्का जलडमरू के बीच होने वाले समुद्री मार्गों के एक महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु पर स्थित है साथ ही भारत के अंडमान निकोबार द्वीप समूह से उत्तर में 30 मिल की दूरी पर स्थित है। अतः कोको द्वीप इन सामुद्रिक स्ट्रैटेजिक से जुड़े बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के महत्वपूर्ण जलमार्गो तक सीधी पहुंच प्रदान करता है। सैटलाइट इमेजरी के विशेषज्ञ मैक्सार टेक्नोलॉजी द्वारा जनवरी 2023 की तस्वीरों में म्यांमार के कोको द्वीप समूह पर निर्माण संबंधी गतिविधियों के नए स्तरों को दर्शाती है जो विशेष रूप से भारत के लिए स्त्रातेजिक चिंताएं बढ़ा दी है।

SATELLITE IMAGE OF CHINESE HANGER IN COCO ISLAND CLICKED BY MAXAR TECH

GREAT POWER COMPETITION IN THE INDIAN OCEAN

चीन और हिंद महासागर का क्षेत्र

हिंद महासागर संपूर्ण विश्व के देशों के लिए आर्थिक और सामरिक महत्वाकांक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक क्षेत्र बन गया है। आज सामुद्रिक शक्ति में श्रेष्ठता प्राप्त करने हेतु सशक्त ब्लू वाटर नेवी की

चीनी महत्वाकांक्षा और हिंद महासागर की भारतीय प्रभुत्व आवश्यकताओं ने इस क्षेत्र को शक्ति के खेल का मंच बना दिया है। जहां अंडमान और निकोबार द्वीप समूह व कोको द्वीपों पर रणनीतिक निर्माण व गतिविधियों ने भारत और चीन दोनों ही राष्ट्रों के लिए अहम रणनीतिक बन गई है। हिंद महासागर में चीन के भू–राजनीतिक लाभों में ऊर्जा आपूर्ति और उसके व्यापार मार्गों के लिए एक सुरक्षित जल मार्गों की आवाजाही प्रबंध करना और चीन के सभी संचार की समुद्री लाइनों पर उसके समुद्री प्रभाव को बढ़ाना शामिल है। यह ध्यान देने योग्य है। चीन एक ऐसा राष्ट्र बन गया है जिसका हिंद महासागर में स्थित 6 द्वीपों– कोमोरोस, मेडागास्कर, मॉरीशस, सेशेल्स और श्रीलंका में चीनी दूतावास है। चीन की प्रथम रणनीति मोतियों की माला में क्यौकफ्यू, म्यांमार, चटगांव बांग्लादेश, हंबनटोटा श्रीलंका, ग्वादर पाकिस्तान और जिबूती मे नौसैनिक व सैन्य उपयोगी जैसे अड्डे शामिल है। 2020 में चीन द्वारा दिया गया ऋण म्यांमार के 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर के विदेशी ऋण का लगभग 40 प्रतिशत दिया गया है और यह संभवतः बढ़ गया था। म्यांमार का प्रमुख क्यौकफ्यू बंदरगाह पश्चिमी क्षेत्र चीन के निवेशों का अहम हिस्सा है जिससे चीन को तरलीकृत गैस और तेल के परिवहन के लिए हिंद महासागर तक पहुंच प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है जो चीन को मलक्का जलडमरू दुविधा को कम कर आवाजाही के वैकल्पिक शिपिंग माध्यम के जलमार्गो बनाने का भविष्यपरक कदम होगा।

भारतीय समुद्री सुरक्षा का महत्व

Yuan Wang 05

हिंद महासागर का सामरिक महत्व विश्व के साथ विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के लिए महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है और यह क्षेत्र भारत और चीन के बीच विवाद का क्षेत्र भी है। जहां एक ओर भारत और चीन की शक्तियां रुचि क्षमताएं उपभोग अर्थव्यवस्था बढ़ती जा रही है दूसरी ओर दोनों ही एशियाई देशों में प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती जा रही है। ऐसे में हिंद महासागर के बंगाल की खाड़ी में स्थित कोको द्वीप जिसे म्यांमार द्वारा 1990 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना को पट्टे पर दिये जाने की बात सामने आती रही है जिससे भारतीय सामुद्रिक सुरक्षा एवं भारतीय सामुद्रिक संप्रभुता चुनौतिपूर्ण हो रही है, क्योंकि भारत के सुरक्षात्मक एवं स्त्रातेजिक प्रतिष्ठान हिंद महासागर के लहरों को छुते हैं, जिसमें भारतीय सुरक्षा को सफल बनाने वाले मिसाइल परीक्षण रेंज अर्थात् बालासोर परीक्षण रेंज उड़ीसा तट के निकट है। यह कोको द्वीप से 1177 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विशेषज्ञों को यह संभावित संदेह है कि इस कोको द्वीप को चीन भारतीय मिसाइल परीक्षणों को ट्रैक करने व निगरानी करने के उद्देश्य के लिये उपयोग कर सकता है। यह भविष्यगत् भारतीय सुरक्षा तकनीकी विकास में बाधक बन सकता है साथ ही विशाखापट्टनम पर स्थित हमारे प्रतिष्ठित सैन्य संपत्तियों की भी जांच एवं जानकारी लेने का माध्यम भी हो सकता है। हालांकि यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि चीनी गतिविधियों को कोको द्वीप पर संचालित किया जा रहा है किंतु कोको द्वीप पर बन रहे नए हैंगर क्षेत्र यह दर्शा रहे हैं कि म्यांमार की जुंटा सरकार कोको द्वीप पर अपनी गतिविधियां और उद्देश्यों को चीनी सहायता से बढ़ा रहा है। भारत सदैव से लोकतांत्रिक विचारों का प्रेरक रहा है, किंतु म्यांमार में आए नए सैनिक शासन के प्रति भारत का झिझक व्यवहार स्वाभाविक है, किंतु चीन अब म्यांमार के सैन्य तख्ता पलट को अवसर के रूप में देखता आया है।

चीन की सिनोस्फीयर (स्वेच्छा से या अनिच्छा से) के विचारधारा ने म्यांमार को भी अछूता नहीं रखा है। ऐसे में भारत को प्रत्यक्ष होने वाली गतिविधियों के पूर्व ही इसे रोकने के प्रयास करने होंगे क्योंकि चीन हिंद महासागर क्षेत्र में निगरानी एवं प्रभुत्व बनाए रखने के लिए अपनी जासूसी जहाज तैनात कर रखे हैं जिनका उद्देश्य PLA नौसेना द्वारा इंडो पेसिफिक क्षेत्र की मैपिंग 2025 तक की पूरा करने हेतु तैनात है। चीन का Xiang hong 01 अंडमान द्वीप

के परीक्षण के तहत 12 किलोमीटर की गहराई में रह सकने वाले जहाज को पहचान कर सकता है। यह XYH01 2019 में बंगाल की खाड़ी में दाखिल हुआ, जिसका उद्देश्य समुद्र तल की मैपिंग करना एवं पनडुब्बी ऑपरेशन हेतु डाटा एकत्र करना है। हिंदमहासागर में चीनी जहाजों की खुफिया गतिविधियां इंसानी जान या डिप्लोमैटिक घटनाओं को खतरे में डाले बिना यह जानकारी इकट्ठा करने के लिए स्वयं को आइडियल बनाता है। मैरीटाइम रिसर्चर पूजा भट्ट बताती हैं कि अंडमान और निकोबार आइलैंड के पास चीनी जहाजों की लगातार मौजूदगी इस बात की ओर इशारा करती है कि वे सैन्य गतिविधियॉ समेत अलग–अलग उद्देश्यों के लिए हिंद महासागर के पानी की मैपिंग करने की सोच रखते हैं जो भविष्य में समुद्री युद्ध एवं खतरे की स्तिथि मे सबमरीन और दूसरे नेवल एसेट्स की ऑपरेशनल कैपेबिलिटी बेहतर करेंगे, जैसे कि सोनार परफॉर्मेंस और नेविगेशनल एक्यूरेसी द्वारा एनवायरनमेंटल हालात को समझकर, सबमरीन रूट को ऑप्टिमाइज करना और स्टेल्थ कैपेबिलिटी को बेहतर बनाना आदि शामिल होंगे। वर्तमान में ये जहाज शायद बंगाल की खाड़ी में भारत की बढ़ती मिलिट्री और स्पेस रिसर्च से जुड़ी एक्टिविटी पर नजर रख रहे हैं। इस हेतु कोवर्ट सर्विलांस और डेटा कलेक्शन के लिए अनमैन्ड अंडरवाटर व्हीकल (UUV) या अंडरवाटर ड्रोन तैनात करने की तकनीक का प्रयोग किया जा रहा हैं।

जासुसी जहाज	हिंद महासागर में प्रवेश वर्ष
Xiong yang hong 01	2019
Xiong yang hong 06	2019
Shiyan-1	2019
Yan wang 6	2022
Xiong yang hong 01	2024
Da Yang yi hao	2025
Yuan Wang 05	2025

उपर्युक्त कुछ जहाज के नाम है जिसे जासूसी सर्वर जहाज भारत के EEZ क्षेत्र में एवं मिसाइल परीक्षण क्षेत्र के पास घुसपैठ करते आये है। अन्य जासुसी जहाजों के नाम उपलब्ध नहीं है क्योंकि अंडमान सागर में स्थित भारतीय दीप अंडमान निकोबार दीप समूह जो भारतीय सुरक्षा एवं प्रभुत्व के लिए अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र के साथ ही यह भारतीय सशस्त्र बलों का त्रि सेवा थिएटर कमांड भी है। यह चीनी महासागरीय प्रभुत्व महत्वकांक्षाओं में अवरोधक है।

हिन्द महासागर में भारतीय सुरक्षा हेतु विकल्प

1. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह 450 समुद्री मील के क्षेत्र में फैले कुल 542 द्वीप का समुह क्षेत्र हैं। इसकी भौगोलिक स्थिति सबसे उत्तरी बिंदु म्यांमार से मात्र 22 समुद्री मील दूर और सबसे दक्षिणी बिंदु इंडोनेशिया से केवल 90 समुद्री मील दूर में फैला है। यह क्षेत्र चीन की सुरक्षा दुविधा 'मलक्का जलडमरू' के निकट होने के कारण, भारत को चीन की 'मोतियों की माला' रणनीतिक प्रतिस्पर्धा करने के लिए विकल्प प्रदान करता है, अंडमान निकोबार द्वीप क्षेत्र में बंगाल की खाड़ी अपितु अंडमान सागर में फैले 6 डिग्री एवं 10 डिग्री चैनल से लगभग 60,000 से अधिक वाणिज्य जहाज आवागमन करते हैं उन पर निगरानी रखने एवं प्रभाव रखने में मदद करता है। मलक्का

जलडमरूमध्य और सिक्स डिग्री चैनल (जिसे ग्रेट चैनल भी कहा जाता है) का महत्व भारत अपितु पूर्व एशिया जैसे इंडोनेशिया मलेशिया थाईलैंड जैसे देशों के लिए भी महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है, इस क्षेत्र में हो रही चीनी गतिविधियॉ भी अन्य घटनाओं से सीधे जोड़ती है। इस तरह अंडमान निकोबार द्वीप समूह की उपस्थिति व प्रभाव इन देशों को भी प्रभावित करती है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की भू–राजनीतिक निकटता भारतीय मुख्य भूमि से 700 समुद्री मील दक्षिण–पूर्व में स्थित हैं। यह क्षेत्र प्रमुख जलडमरूमध्य जैसे मलक्का जलडमरूमध्य एवं लोम्बोक जलडमरूमध्य से जुड़े होने के कारण यह द्वीप समुह हिन्द महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ने वाले मार्ग के अत्यंत निकटता रखे हुए हैं। इंडोनेशिया के सबांग और म्यांमार के कोको द्वीप से निकट में स्थित यह द्वीप, क्षेत्रीय भू–राजनीति, विशेष रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया में, भारतीय रणनीतिक लाभ प्रदान करता है। आगामी भविष्य में प्रस्तावित थाईलैंड के क्रा केनाल परियोजना निर्मित होने से नई समुद्री गतिविधि प्रदान कर अन्य समुद्री मार्ग केंद्रों को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु होगा, जैसे कि ज्ञात है अनन्य आर्थिक क्षेत्र किसी भी देश के लिए अत्यंत आवश्यक क्षेत्र है। UNCLOS के तहत भारत के अनन्य आर्थिक क्षेत्र और महाद्वीपीय शेल्फ का विस्तार करके, ये द्वीप पर्याप्त समुद्री स्थान प्रदान करते हैं, जिससे भारत का समुद्री प्रभुत्व सुदृढ़ होगा।

2. भारत के उत्तरी अंडमान द्वीप समूह में लैंडफॉल द्वीप 13.65 उत्तरी अक्षांश और 93.00 पूर्वी देशांतर पर स्थित है, यह द्वीप पोर्ट ब्लेयर से लगभग 220 किलोमीटर दूर है। लैंडफॉल द्वीप म्यांमार के कोको द्वीप समूह के करीब है, इसकी दुरी केवल 20–40 किलोमीटर हैं। लैंडफॉल द्वीप का क्षेत्रफल 3.1 वर्ग किलोमीटर है।

लैंडफॉल द्वीप का भौगोलिक स्थिति भारत के लिए रणनीतिक महत्व रखता है, क्योंकि यह पूर्वी अंडमान के साथ–साथ म्यांमार के कोको द्वीप समूह के करीब है। यह चीनी गतिविधियों के निकट है। भारतीय सेना ने लैंडफॉल द्वीप पर अपनी सैन्य गतिविधियाँ और युद्ध तत्परता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। अंडमान और निकोबार कमान के कमांडर–इन–चीफ, लेफ्टिनेंट जनरल अजय सिंह ने भी लैंडफॉल द्वीप पर सैन्य गतिविधियों की संभावना व्यक्त की है। यह द्वीप वर्तमान में पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ है और न ही विश्व पटल के सचेत में है, इसलिये इसकी रणनीतिक भौगोलिक उपस्थिति को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यह समुद्री परिवहन एवं व्यापार मार्ग की पर्यवेक्षण एवं एक्ट ईस्ट भारतीय नीति को सबल बनाने का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकता है। जिस प्रकार अण्डमान निकोबार द्वीप समुह 'भारतीय समुद्री सुरक्षा प्रहरी' के रूप में विद्यमान है वैसे ही लैण्डफॉल द्वीप समुह 'न डुबने वाला विमानवाहक पोत' है।

चुनौतियॉ

भारतीय समुद्री शक्ति का विकास महासागरीय भारतीय द्वीपों के विकास से जुड़ा हुआ है, जैसे कि ज्ञात तथ्यों 2011 के अनुसार लैंडफॉल द्वीप में आकाचारी जनजातीय जनसंख्या कुल 6 हैं। ये बाहरी हस्ताक्षेप से दूर रहती है। उनकी उपस्थिति में सैन्य विकास विनिर्माण करना मानव अधिकार एवं जनजातिय अधिकारों के नियमानुसार विरूद्ध होगा। यहॉ किया जाने वाला भविष्यगत विकास इस द्वीप की परिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि इस द्वीप में लुप्तप्राय हॉक्बील कछुआ संरक्षण करने के लिये 1987 में लैण्डफॉल द्वीप वन्यजीव अभ्यारण बनाया गया है, इस अभ्यारण में अन्य दुर्लभ जीव प्रजातियों को संरक्षित किया जा रहा है एवं 2004 सुनामी से इस द्वीप क्षेत्र को नुकसान हुआ था, अतः भविष्य में सैन्य विनिर्माण संरचना की पर्यावरणीय आपदाओं से प्रभावित होने की आशंका बनी रहेगी।

निष्कर्ष

हिंद महासागर में चीन की व्यावसायिक गतिविधियों के साथ सैन्य उपयोगिता को लेकर संशय जिसमें हमें चीन के सैन्य निवेष का पुर्वाभास हो रहा है। यह भारत ही नहीं अपितु अमेरिका के विरूद्ध उच्च स्तरीय सैन्य अभियान हेतु संचालन में सक्षम होंगे । नीति–निर्माताओं को उन प्रमुख सांकेतिक बिन्दुओं पर पर्यवेक्षण रखनी चाहिए

जिससें हम भविष्यपरक इन घटनाक्रम का पुर्वानुमान लगा सके। भारत और चीन के मध्य चल रहे प्रतिस्पर्धा सेशेल्स, मेडागास्कर और मॉरीशस, श्रीलंका, म्यांमार एवं मालदीव में केवल क्षेत्रीय प्रभाव और सैन्य शक्ति तक ही सीमित नहीं है बल्कि चीन, भारत के हिन्दमहासागर में प्रथम नौसैनिक प्रतिक्रिया और सुरक्षा प्रदाता की दृष्टिकोण को चुनौती देता हैं। इसके प्रतिरोध में भारत, राज्य के विरोधियों के विरूध्द समुद्री–आधारित निजी जानकारी एकत्रित करने के नए प्लेटफॉर्म और रसद नेटवर्क की मजबूती बढ़ाने के प्रयासरत हैं।

सैन्य संघर्ष के माहौल में अभियानों को जारी रखने के लिए यह जानकारी जरूरी होंगे और यह भविष्यपरक देश हित की योजना का समुद्रीक रणनीति हैं क्योंकि चीन की कई दोहरे उपयोग वाली विकसित क्षमताएं संघर्ष के माहौल में उच्च–स्तरीय उद्देश्यों के संचालन करने मे सक्षम होंगी, जिनका आधार चीन के बंदरगाहों और अन्य बुनियादी ढाँचे के निर्माण करने के लालच 'ऋण–जाल कूटनीति' में शामिल हैं। यह कुटनीति हिंद महासागर के सभी देश जिनका संबंध सीधे भारत एवं हिन्द महासागर के देशों की समुद्रिक असुरक्षा का कारण बन सकती है जिसके लिये हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी, IFC-IOR (सूचना संलयन केंद्र – हिंद महासागर क्षेत्र) के माध्यम से सहयोग, क्वाड और कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन जैसी अन्य पहल हिंद महासागर मे स्थिति देशों की प्रतिरक्षा नीति की तरह भविष्य में भारत द्वारा चीन के लिये प्रतिरोधक नीति बनाया जाना चाहिये साथ ही भारत ने नौसेना की संपत्तियों के स्वदेशी विकास और नौसेना के आधुनिकीकरण में निवेश करके अपनी समुद्री शक्ति को मजबूत करने के प्रयास भी शुरू किए हैं। नौसेना के युद्धपोतों के जलावतरण से पता चलता है कि अब भारतीय महासागर में नई दिल्ली के लिए बल निर्माण एक प्रमुख प्राथमिकता है।

संदभ सूची

1. Bhaumik, Anirban (2025, September 21) China's spy ship Yuan Wang 5 back in Indian Ocean amid speculation over India's missile test next week. Deccan Herald. https://www.deccanherald.com/india/chinas-spy-ship-yuan-wang-5-back-in-indian-ocean-amid-speculation-over-indias-missile-test-next-week-3738374, Accessed on 05/10/2025.
2. *Chinese spy bases on Myanmar's Great Coco Island? Here we go again*. (n.d.) Lowy Institute. https://www.lowyinstitute.org/the-interpreter/chinese-spy-bases-myanmar-s-great-coco-island-here-we-go-again, Accessed on 02/10/2025.
3. *Chinease base in indian ocean - Yahoo Image Search Results*. (n.d.) https://images.search.yahoo.com /search/images?p=chinease+base+in+indian+ocean &fr=mcafee&type= E210US885G0&imgurl=https%3A%2F%2Fakm-img-a-in.tosshub.com% 2Findiatoday%2Fimages%2Fstory%2F202007%2FChina-Arun-Prakash-Jul27 _1200x.jpeg#id=3&iurl=https%3A%2F%2Fcimsec.org%2Fwp-content% 2Fuploads%2F2015%2F08%2Fcompetition-in-the-Indian-ocean.jpg&action=click, Accessed on 02/10/2025.
4. Coco Island - Chinese intelligence agencies (n.d.) https://irp.fas.org/world/china/facilities/coco.htm, Accessed on 03/10/2025.
5. Coco Islands in Myanmar: a growing concern (2024, April 4) Pacific Forum. https://pacforum.org/publications/pacnet-33-myanmars-coco-islands-a-concern-not-to-be-ignored/, Accessed on 02/10/2025.
6. Destiny (n.d.) According to satellite image captured by Maxar technologies, On the Coco Islands of Myanmar, Indian Ocean Waters, China is building a military base ./ : r/IndiaSpeaks. https://www.reddit.com/r/IndiaSpeaks/comments/135c40j/according_to_satellite_image_captured_by_maxar/?captcha=1, Accessed on 05/10/2025.

7. Frontier (2024, October 3) *Chinese base or wild rumour? The Coco Islands mystery*. Frontier Myanmar. https://www.frontiermyanmar.net/en/chinese-base-or-wild-rumour-the-coco-islands-mystery/, Accessed on 03/10/2025.
8. *Google Maps*. (n.d.) Google Maps. https://www.google.com/maps/place/Landfall/@3.5238792,72.2826607,4.5z/data=!4m6!3m5!1s0x30902e8e0945591d:0x233fac5f2d481447!8m2!3d13.658724!4d93.0025615!16s%2Fm%2F0rfcc69?entry=ttu&g_ep=EgoyMDI1MTAxNC4wIKXMDSoASAFQAw%3D%3D, Accessed on 04/10/2025.
9. Gyan, I. (n.d.) Coco Island: Geography, History, Strategic Significance UPSC. IAS GYAN. https://www.iasgyan.in/daily-current-affairs/strategic-importance-of-cocos-islands, Accessed on 06/10/2025.
10. Landfall Island Wildlife Sanctuary (2023, October 8) Learn UPSC. https://www.learnupsc.com/2023/10/landfall-island-wildlife-sanctuary.html, Accessed on 01/10/2025.
11. Mishra, H. (2025, April 3) Coco Islands: A Strategic Geopolitical Asset with a Complex History. Bharat Articles. https://bharatarticles.com/coco-islands-a-strategic-geopolitical-asset-with-a-complex-history/, Accessed on 02/10/2025.
12. Pant, H. V. (2025, June 26) Jostling for primacy: India's China Challenge in the Indian Ocean. orfonline.org. https://www.orfonline.org/research/jostling-for-primacy-india-s-china-challenge-in-the-indian-ocean, Accessed on 03/10/2025.
13. Ratcliffe, R. (2023, May 1) Military construction on Myanmar's Great Coco island prompts fears of Chinese involvement. *The Guardian*. https://www.theguardian.com/world/2023/may/01/military-construction-on-myanmars-great-coco-island-prompts-fears-of-chinese-involvement, Accessed on 05/10/2025.
14. Rauscompass. (2024, April 22) Andaman and Nicobar, through a strategic lens - Rau's IAS. *Compass by Rau's IAS*. https://compass.rauias.com/current-affairs/andaman-and-nicobar-through-a-strategic-lens/, Accessed on 07/10/2025.
15. Selth, A. (2008) Burma's Mythical Isles. *AQ: Australian Quarterly*, *80*(6), 24–28. https://www.jstor.org/stable/20638594, Accessed on 03/10/2025.
16. *Strategic importance of Coco Island* (n.d.) Bay of Bengal Post. https://bayofbengalpost.com/news/strategic_importance_of_coco_island, Accessed on 02/10/2025.
17. Swarajya Staff. (2022, November 8) *India to stop Chinese spy ship from entering exclusive economic zone; It had expelled survey vessel near Andaman in 2019*. Swarajyamag. https://swarajyamag-com.cdn.ampproject.org/v/s/swarajyamag.com/amp/story/news-brief%2Findia-to-stop-chinese-spy-ship-from-entering-exclusive-economic-zone-expelled-survey-vessel-operating-near-andaman-in-2019?amp_gsa=1&_js_v=a9&usqp=mq331AQIUAKwASCAAgM%3D#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17579402050064&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com&share=https%3A%2F%2Fswarajyamag.com%2Fnews-brief%2Findia-to-stop-chinese-spy-ship-from-entering-exclusive-economic-zone-expelled-survey-vessel-operating-near-andaman-in-2019, Accessed on 04/10/2025.
18. Symon, D. (2025, January 30) *Is Myanmar building a spy base on Great Coco Island?* Chatham House – International Affairs Think Tank. https://www.chathamhouse.org/publications/the-world-today/2023-04/myanmar-building-spy-base-great-coco-island, Accessed on 06/10/2025.

****